भारतीय प्रागैतिहासिक काल : पुरापाषाण कालीन संस्कृति

[INDIAN PRE-HISTORY AGE : PALAEOLITHIC CULTURE]

भूमिका
(INTRODUCTION)

मानव सभ्यता का इतिहास जानने से पूर्व, प्रत्येक जिज्ञासु यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि मानव का आविर्भाव अर्थात् उद्‌भव कब हुआ ? मानव की उत्पत्ति की कहानी बड़ी ही रोचक है। इतिहास में जहाँ हम मानव के क्रियाकलापों के अध्ययन पर जोर देते हैं, वहीं मानवशास्त्र के तहत हम मानव के उद्‌भव एवं विकास का अध्ययन करते हैं। एक स्वतन्त्र वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में मानव विज्ञान का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य हुआ, इससे पूर्व यह विषय सामान्यत: इतिहास का ही अंग था।

मानवीय उद्‌भव के दृष्टिकोण
(VIEWS OF THE ORIGIN OF HUMAN BEINGS)

आदि मानव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रमुखत: दो मत हैं, एक धार्मिक एवं दूसरा वैज्ञानिक। विश्व के प्राय: सभी धर्मों में प्राणियों के उद्‌भव एवं मानवीय उत्पत्ति से सम्बन्धित कथाएँ उपलब्ध हैं। विश्व के विभिन्न धर्मों के अनुसार पृथ्वी एवं मानव सहित सभी प्राणियों का सृष्टिकर्ता ईश्वर है। ईश्वर ने ही मनुष्य को पैदा किया एवं उसी की इच्छानुरूप मनुष्य ने विकास किया। आधुनिक काल में सम्पन्न वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने उक्त धार्मिक मत को पूर्णत: निराधार सिद्ध कर दिया है। उक्त धार्मिक मत आज के वैज्ञानिक युगीन मानव के तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। प्राचीन एवं मध्ययुगीन वैज्ञानिक इस धारणा को अन्धविश्वास मानते हैं कि पृथ्वी व मानव का रचयिता ईश्वर है।

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति
(ORIGIN OF LIFE ON EARTH)

पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास का तो वैज्ञानिकों ने पता लगा लिया मगर अभी तक वे यह नहीं जान पाये थे कि पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति कैसे हुई ? वैज्ञानिक यह तो जाने गये थे कि जीवधारियों का शरीर कुछ भौतिक तत्वों के मिश्रण से बना है। **विकासवाद के सिद्धान्त** (Theory of evolution) के तहत नृतत्व शास्त्रियों का मानना है कि मानव सहित विभिन्न पशु-पक्षियों एवं पौधों में एक ही प्राण की धारा प्रवाहित व विकसित हुई है। अत: आज से लगभग 190 करोड़ वर्ष पूर्व, पृथ्वी पर होने वाली रासायनिक व भौतिक क्रियाओं के फलस्वरूप भौतिक तत्व से जीवतत्व स्वयं ही अस्तित्व में आ गया। विकासवाद के सिद्धान्त ने यह स्थापित किया कि जीवों के क्रमिक विकास के उपरान्त ही मानव वर्तमान अवस्था तक पहुँच पाया।